2 अगस्त 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ब्रेम्पटन (कनाडा) में -

श्री आदिनाथ जिनमन्दिर वेदी शिलान्यास संपन्न

● वेदी शिलान्यास में 700 साधर्मियों की उल्लेखनीय उपस्थिति ● पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की घोषणा ● कनाडा के अधिकारी, मंत्री, मेयर इत्यादि की उपस्थिति ● प्रतिष्ठा महोत्सव के अनेक पात्रों का चयन

ब्रेम्पटन (कनाडा) : वर्तमान समय में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अनेक कीर्तिमान स्थापित हुये हैं। इसी क्रम में ब्रेम्पटन (कनाडा) में निर्माणाधीन श्री आदिनाथ दिगम्बर जैनमंदिर में वेदी शिलान्यास समारोह दिनांक 12 से 14 जुलाई तक अत्यंत भव्यतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के छहढाला पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, किरीटभाई गोसलिया आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्थानीय पाठशाला के छात्रों ने भी सहयोग प्रदान किया। अष्टदेवी एवं धर्ममाता की चर्चा का कार्यक्रम भी अत्यन्त आकर्षक रहा। इन्द्रसभा का संचालन पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित ऋषभजी छिंदवाड़ा द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक से हुआ। ध्वजारोहण डॉ. किरीटभाई गोसलिया अमेरिका एवं जिनमंदिर के निर्माता श्री ज्ञानचन्दजी जैन परिवार द्वारा किया गया। मंगल कलश शोभायात्रा तथा रत्नत्रय विधान पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा हुआ।

वेदी शिलान्यास के पूर्व शिलान्यास सभा का आयोजन हुआ। ब्र. हेमन्तभाई गांधी ने मन्त्रोच्चारपूर्वक अत्यन्त भक्तिभाव से इस विधि को संपन्न कराया।

इस अवसर पर इस जिनमंदिर में विराजित होने वाले जिनबिम्बों के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की घोषणा दिनांक 6 से 13 जुलाई 2014 के रूप में हुई। साधर्मियों के अतिउत्साह के कारण उसी समय पंचकल्याणक के प्रमुख पात्रों जैसे भगवान के माता-पिता, सौधर्म इन्द्र एवं अनेक इन्द्रों व राजाओं की घोषणा हो गई।

कार्यक्रम में लगभग 700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। इसके अतिरिक्त ब्रेम्पटन (कनाडा) के उच्चाधिकारी, मन्त्री एवं स्थानीय मेयर लिन्डा जैफरी, विक्की ढिल्लन, जैन एण्डरसन आदि भी उपस्थित रहे। उन्होंने यह भावना व्यक्त की कि निकट भविष्य में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर तीर्थंकरों के देश भारत से अधिक से अधिक संख्या में लोग पधारें एवं इस देश में भी सत्य और अहिंसा का पाठ पढायें।

संपूर्ण कार्यक्रम में श्रीमती ज्योत्सनाबेन अमेरिका का भी विशेष सहयोग रहा। शिलान्यास उत्सव में निमित्त जैन, आशीष जैन, संजय जैन, राज पाटील, सुरेन्द्र जैन, विकास जैन, डॉ. महेन्द्र जैन, डॉ. जिनेन्द्र जैन, सुभाष जैन, अजय जैन, चन्द्रवदन जैन, सतपाल जैन, दिनेश जैन सचिन, शान जैन एवं ज्ञानचन्द जैन परिवार का विशेष सहयोग रहा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में मंजरी जैन, प्रतिभा जैन, रिमा जैन का विशेष सहयोग रहा।

संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त विधान में श्री कपिलजी अलीगढ व श्री अनिलजी छिन्दवाड़ा का भी सहयोग रहा।

महाविद्यालय का सुयश

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन सभा द्वारा के.सी. कटारिया चैरिटेबल ट्रस्ट बापूनगर के सौजन्य से **'जैनधर्म वैज्ञानिक धर्म है'** विषय पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम दिनांक 10 जुलाई को आयोजित किया गया।

इसमें श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र अच्युतकान्त जैन जसवंतनगर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मयंक जैन टीकमगढ, सुमित जैन कोलारस, नरेश जैन भगवां ने भी पुरस्कार प्राप्त किया।

सभी विद्यार्थियों को पुरस्कार के रूप में नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सम्पादकीय –

नवीन शोध और संभावनाओं के संदर्भ में विश्व शांति में जैनधर्म का योगदान

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, शास्त्री, न्यायतीर्थ, एम.ए.बी.एड., साहित्यरत्न

जैनधर्म के अनुसार तीनों लोकों में जहाँ भी जीवादि छहों द्रव्य रहते हैं, उन सभी स्थानों का एक नाम विश्व है। विश्व की परिभाषा भी यही है कि ''छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं। विश्व का अर्थ केवल कोई स्थान विशेष नहीं है, बल्कि सर्व जीवादि छहों द्रव्य के अस्तित्व से है। विश्व में जीव अनन्त हैं, पुद्गल अनन्तानन्त हैं, धर्म द्रव्य एक है, अधर्म द्रव्य एक है, आकाश द्रव्य एक हैं तथा कालद्रव्य असंख्य है।''

जीवद्रव्य चेतन है, शेष पाँच द्रव्य अचेतन हैं। अचेतन द्रव्यों में तो शान्ति–अशान्ति होती ही नहीं है। एक मात्र जीवद्रव्य में शान्ति व अशान्ति होती है। अतः यह विचारणीय है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शोध और संभावनाओं के आधार पर जीवों में शान्ति कैसे संभव है ? वे सुख–शान्ति से कैसे रह सकते हैं।

लोक में तो मात्र मानवों में ही शांति–अशान्ति की बात कही जाती है, लोक मात्र मानवों तक की ही बात करता है, जबकि सभी जीव या जीवमात्र सुख–दुःख का अनुभव करते हैं। अन्य जीवों में शांति–अशान्ति रहे, लोक को इससे कोई मतलब नहीं, तभी तो लोक व अधिकांश मनुष्य पंचेन्द्रिय प्राणियों तक को मारकर खा जाते हैं। वे उनके अस्तित्व को ही नहीं गिनते , जबकि वे भी हम–तुम जैसे ही जीव हैं। उन्हें भी सुख–दुःख होता है, वे भी सुखी होना चाहते हैं।

सामान्यतः जगत में सुख से रहने का अर्थ भी मात्र रोटी–कपड़ा और मकान तक ही सीमित है, पर वास्तव में क्या मात्र इतने से ही सब जीव सुखी हो जायेंगे ? एतदर्थ वर्तमान परिप्रेक्ष में क्या मात्र मानवों में ही नवीन शोध और संभावनाओं की खोज पर्याप्त होगी ?

वस्तुतः बात यह है कि जगत में किसी भी सुख सामग्री या सुखद वस्तुओं की कमी नहीं है। लोक में सभी कुछ भरपूर है, परन्तु सभी जीवों को अपने–अपने पुण्य–पाप के अनुसार ही तो मिलेगा। हम दिन–रात पाप भावों में आकंठ निमग्न रहें और पुण्य के फल की वांछा करें तो यह कैसे संभव होगा? फल तो अपनी अपनी करनी के अनुसार ही मिलता है न !

तत्त्वार्थ सूत्र में लिखा है, बहु आरंभ एवं बहु परिग्रह के भाव से बचना होगा ? क्योंकि बहु आरंभ व परिग्रह नरक गति का कारण है, जहाँ भूख–प्यास व सर्दी, गर्मी आदि के भयंकर दुःख है। मायाचार तिर्यंचायु का कारण हैं। तिर्यंचगति के दुःख हम स्वयं देखते हैं। अतः यदि नरक में नहीं जाना तो बहु आरंभ व परिग्रह के पाप से बचें, तिर्यंचगति में न जाना हों तो मायाचार न करें। ये दोनों गतियाँ अति दुखद हैं ?

मानवों को सुखी रहने के लिए यही सच्ची शोध है कि हम पुण्य कार्य करें, परोपकार करें, पापों से डरें, सही आचरण करें तो हमें अवश्य ही पुण्य के फल में लौकिक अनुकूलता और लौकिक सुख–शान्ति प्राप्त होगी।

अपने–अपने पुण्य–पाप के अनुसार ही संयोग मिलते हैं। न केवल जैनधर्म के अनुसार, बल्कि सभी धर्मों के अनुसार जीवों को सुख–दुःख के संयोग उनकी करनी के अनुसार ही मिलते हैं। अतः यदि हम सत्कर्म करें तो निःसंदेह हम सुखी रह सकते हैं। सुखी होने के अन्य प्रयत्न सब निरर्थक हैं।

मानवों के सिवाय अन्य गतियों में तो सुख–दुःख (भोगों) की ही प्रधानता है; नरकों या स्वर्गों में तथा पशु गति में सत्कर्म करने के अवसरों को मुख्यता नहीं है, वहाँ तो कर्मफल भोगने की ही प्रमुखता है। अतः मानवों को ही कल्याण करने की बात कही जाती है।

एतदर्थ हमें किसी को भी सताना नहीं चाहिए, अपने स्वार्थ के लिए किसी को धोखा नहीं देना चाहिए। अपने क्षुद्र स्वाद के लिए किसी भी प्राणी का वध नहीं करना चाहिए। पाँचों पापों से बचे रहने का प्रयत्न करना चाहिए। एतदर्थ सदाचारी और संयमी जीवन जीना चाहिए।

लोग जरा से स्वाद और स्वास्थ्य के लोभ में पंचेन्द्रिय प्राणियों तक का घात करते देखे जाते हैं। ये सब पाप के परिणाम हैं, दुख के कारण हैं। माँसाहारी का जीवन कभी सुखी नहीं रहता, क्योंकि मांस प्राणीघात के बिना प्राप्त नहीं होता तथा प्राणी घात हिंसा महापाप है।

नवीन शोध और संभावनाओं के नाम पर दूसरों के दोष ढूँढ़ना, अपने दोषों को स्वीकार न करना तथा परिस्थितियों का बहाना बनाकर अपने दोष दूसरों का माथे मढ़ना व स्वयं को निर्दोष बताना भी निरर्थक है। सभी नवीन शोध और संभावनायें केवल पुद्गल पर

ही होती हैं, जिनमें सुख–शान्ति होती ही नहीं है; अत: हमें अहिंसक जीवन जीना चाहिए, सत्य का आचरण करना चाहिए, चोरी और व्यभिचार तथा अनावश्यक अधिक धन संग्रह से बचना चाहिए। ये सब पाप भाव हैं। इनसे उसके फल में पाप बंध होगा तो दुःख ही होगा। सुख–शान्ति कैसे प्राप्त होगी ?

एक बार कुछ कृषक बन्धु महर्षि व्यास के पास पहुँचे और उनसे प्रार्थना की कि हम लोग अनपढ़ किसान लोग हैं। १८ पुराणों को तो पढ़ नहीं सकते। हमें तो धर्म करने का कोई ऐसा सरल सा उपाय बता दीजिए, जिससे हमारा उद्धार हो सके। तो महर्षि व्यास ने कहा –

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्।
परोपकाराः पुण्याय, पापाय पर पीड़नम्।।१।।

अठारह पुराणों का सार मात्र इतना है कि परोपकार करने से पुण्य होता है और दूसरों को दुःख देने से पाप होता है। अतः हम सबको परोपकार अर्थात् पुण्यकार्य करना चाहिए और हिंसा, झूठ आदि पाँचों पापों से बचना चाहिए। ऐसा करने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। लोक में परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है और परपीड़ा देने से बड़ा कोई पाप नहीं है। तुलसीदास ने भी यही कहा है –

परहित सरिसधर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधकाई।।१।।

– महाकवि तुलसीदास।

महर्षि व्यास द्वारा उन किसानों को दी गई शिक्षा से उत्साहित होकर कुछ जैन भाई भी अपने गुरु आचार्य अमृतचन्द के पास पहुँचे और उन्होंने कहा – हमें भी ग्यारह अंग और चौदह पूर्व पढ़ने का समय कहाँ है? हमें दिन में नम्बर १ और रात में नम्बर २ के खाते लिखने का ही समय नहीं मिलता। हम ये बड़े–बड़े शास्त्र कब पढ़ें ? हमें भी कोई संक्षिप्त सा रास्ता बता दीजिए।

आचार्य अमृतचन्द्र ने कहा – जैनधर्म अहिंसा प्रधान धर्म है – आत्मा में राग–द्वेषादि भावों का पैदा होना ही हिंसा है तथा हिंसा सबसे बड़ा पाप है और आत्मा के राग–द्वेषादि भावों का पैदा न होना ही अहिंसा है और अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। उन्हीं के शब्दों में कहें तो –

अप्रादुभावखलु रागादीनाम् भवत्य हंसेति।
तेषामेवोत्पत्ति हिंसेति जिनागमस्य संक्षेप।।पु.स.उ.।।

अतः तुम राग–द्वेष से बचो एवं अहिंसक जीवन जिओ। अपनी व किसी भी जीव की हिंसा मत करो। तुम्हारा कल्याण होगा। आत्मघात ही महापाप है; अतः आत्मघात भी नहीं करें।

न्यायशास्त्र के प्रतिष्ठापक एवं चरणानुयोग के पुरस कर्त्ता आचार्य समन्तभद्र ने तो रत्नकरण्ड श्रावकाचार में पाँच अणुव्रतों को अष्टमूलगुणों में ही शामिल करके पाँच अणुव्रतों से ही जैनधर्म का प्रारंभ किया है। वे लिखते हैं –

मद्य मास मधु त्यागैः सहाणुव्रत पंचकम्।
अष्टौः मूलगुणा नांहुः, गृहिणां श्रमणोत्तमः।।

उक्त पद्य में श्रावक को सम्यग्दर्शन के पूर्व अष्टमूलगुणों का पालन करना आवश्यक कहा गया है। जिनमें कि मद्य माँस और मधु के त्याग के साथ स्थूल रूप से पाँच अणुव्रतों का पालन करना भी अनिवार्य कहा है –

अतः श्रावकों को उक्त आठ मूलों का पालन करना तो अनिवार्य है ही, साथ ही कालक्रम जैसे–जैसे लोगों का शिथिलाचार बढ़ा तो इन्हीं आठ मूलों में मद्य, मांस, मधु के साथ अनछने पानी का त्याग, रात्रि में भोजन का त्याग एवं पाँच उदम्बर फलों का त्याग आदि को भी शामिल करके आठ मूलगुणों की संख्या को कायम रखा है।

मानवों के सिवाय अन्य गतियों में तो सुख–दुःख भोगने की ही प्रधानता है। मात्र मनुष्य गति ऐसी है, जिसमें यदि हम सम्यक् पुरुषार्थ करें तो भव का अभाव भी कर सकते हैं, जब तक संसार में रहना पड़े तो धर्म का स्वरूप समझकर तदनुसार आचरण करके संसार अवस्था में भी सुखपूर्वक जीवन जी सकते हैं। एतदर्थ हम अपने पूर्व दुराग्रहों को त्याग कर जो वस्तु का सत्य स्वरूप है, उसे अपनाएँ, अहिंसामय जीवन जिएँ, सत्य को अपनाएँ, अनेकान्त एवं स्याद्वाद का स्वरूप समझें। मिथ्यात्व का वमन करें, कषायों का समन करें, अहिंसक जीवन जीएँ – ये ही सब सुखी होने के उपाय हैं।

अध्यात्म रसिक कविवर दौलतरामजी ने अपनी सम्पूर्ण आध्यात्मिक दौलत बिखेरते हुए यही कहा है कि –

लाख बात की बात यही, निश्चय उर लाओ।
तोरि जगत जग दंदफंद निज आतम ध्याओ।।

तथा च –

''कोटि ग्रन्थ को सार येही रोही जिनवाणी उचरो है।
दौलध्याय अपने आतम को मुक्ति रमा तोय वेग बरे है।।''

एक स्तुति में पण्डित दौलतरामजी ने यह भी कहा है –

''आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय।
मैं रहूँ आप में आपलीन, स करहु हहि ज्यों निजाधीन।।''

इत्यलं, किमधिकं विज्ञेषु

प्राचार्य
श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय,
ए–4, बापूनगर, जयपुर ह्न 302015

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

1. सोनागिरि (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री खरौआ दि. जैन मंदिर नं. 3 में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन अमायन के तत्त्वावधान में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूरनचन्द्रजी सोनागिर द्वारा सायंकाल सिद्धचक्र विधान की जयमाला पर एवं प्रात: पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री जयपुर द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये।

कार्यक्रम में लगभग 150 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित पूरनचंदजी, पण्डित स्वतंत्रभूषणजी एवं राजकुमारजी जैन ग्वालियर के सहयोग से संपन्न हुये।

– शुद्धात्मप्रकाश जैन

2. मुम्बई : यहाँ मलाड (ईस्ट) में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 15 से 19 जुलाई तक डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर द्वारा प्रात: व सायंकाल समयसार के निर्जरा अधिकार एवं दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के आधार पर पंचभाव पर प्रवचन हुये। **– विनोदभाई शाह**

इसी तरह सीमन्धर जिनालय जवेरी बाजार में पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर द्वारा प्रात: सैंतालीस शक्तियों पर एवं रात्रि में अष्टपाहुड पर प्रवचन हुए। दिनांक 21 जुलाई को पण्डित विक्रान्त शहा सोलापुर ने प्रोजेक्टर द्वारा तीनलोक का स्वरूप विस्तार से समझाया

इसी के साथ अन्य उपनगरों में से मलाड (वेस्ट) में पण्डित विपिनजी शास्त्री आगरा, बोरीवली में पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, भायन्दर में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, दहीसर में पण्डित कमलचंदजी पिडावा एवं वसई में पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा व पण्डित अनिलजी दहीसर के प्रवचनों का लाभ मिला।

3. देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर प्रवचनसार विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा एवं पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा प्रवचनसार ग्रन्थ पर प्रवचन हुये।

4. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ रामाशा मन्दिर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: सिद्धचक्र विधान पर, दोपहर में समयसार की गाथा 17–18 पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर क्रिया–परिणाम–अभिप्राय विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सारिका जैन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा भी ली गई।

5. कोटा : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन के उपरान्त ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा प्रवचनसार पर, दोपहर में न्यायदीपिका पर एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त परीक्षामुख सूत्र पर प्रवचन हुये।

6. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में रत्नत्रय मंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात: पंचास्तिकाय संग्रह के मंगलाचरण पर, दोपहर में निमित्त–उपादान चिट्ठी पर एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त परमार्थ वचनिका पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न कराये गये।

दिनांक 23 जुलाई को वीर शासन जयन्ती के अवसर पर प्रात: प्रासंगिक पूजन के उपरान्त डॉ. उत्तमचंदजी द्वारा विशेष व्याख्यान का लाभ मिला। विधान का आयोजन श्रीमती आशाबाई नेमीचन्दजी जैन पायलवाला परिवार द्वारा किया गया। **– संजय जैन**

7. अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित सीमंधर जिनालय में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 15 से 22 जुलाई तक श्री योगसार महामण्डल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा दोनों समय योगसार ग्रन्थ पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त जिनेन्द्र भक्ति व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

दिनांक 15 जुलाई को डॉ. महावीरप्रसादजी द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं श्रीमती आशाजी, मौनीजी लुहाड़िया एवं अन्य महिलाओं द्वारा मंगल कलश विराजमान किया गया।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य श्री शीतलजी पाण्डे उज्जैन एवं श्री दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन द्वारा संपन्न कराये गये।

8. ध्रुवधाम–बांसवाड़ा (राज.) : रत्नत्रयतीर्थ 'ध्रुवधाम' में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनांक 14 से 22 जुलाई तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. जतीशभाईजी ने अनंत सुख प्राप्त अनंत सिद्ध भगवंतों के गुणानुवाद करने वाले सिद्धचक्र मण्डल विधान की जयमालाओं, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने समयसार एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर ने प्रवचनसार ग्रन्थ पर प्रवचन किये।

महोत्सव के संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीश चन्दजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री व पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री द्वारा आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये गये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के नवीन सत्र के छात्रों का ह्न

परिचय सम्मेलन एवं साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 21 जुलाई को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के नवीन छात्रों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रथम सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र. यशपालजी जैन जयपुर एवं तृतीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित सोनूजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि विद्वानों का मार्गदर्शन छात्रों को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित गोमटेश्वरजी शास्त्री, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले, कु. प्रतीति पाटील आदि महानुभाव भी मंचासीन थे।

कार्यक्रम में सभी नवीन छात्रों ने अपना परिचय दिया और महाविद्यालय में प्रवेश को अपना सौभाग्य मानते हुये भविष्य में तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करने की भावना व्यक्त की। इसके साथ ही अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों का परिचय उसी कक्षा के चार प्रतिनिधियों द्वारा उनकी विशेषताओं का मुक्तकों द्वारा उल्लेख करते हुए दिया गया।

महाविद्यालय में इस वर्ष 33 नवीन छात्रों का प्रवेश हुआ है।

साप्ताहिक गोष्ठी :-

(1) श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की अविछिन्न परम्पराओं के अन्तर्गत साप्ताहिक विचार गोष्ठी की परम्परा में इस सत्र की प्रथम रविवारीय गोष्ठी दिनांक 14 जुलाई को आयोजित की गई, जिसका विषय था **'हम और हमारा महाविद्यालय'**।

गोष्ठी की अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की।

इस अवसर पर दस वक्ताओं ने दिये गये विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया, जो इसप्रकार है - **(1) क्या सोचकर लिया महाविद्यालय में प्रवेश**-चर्चित जैन, **(2) महाविद्यालय में प्रवेश के पूर्व एवं पश्चात्**-राहुल जैन, **(3) हमारे विकास में गुरुजनों का योगदान**-मयंक ठगन, **(4) महाविद्यालय का मेरे जीवन पर प्रभाव**-अनुभव, **(5)महाविद्यालय के विद्यार्थियों का भावी जीवन** - अनुभव जैन, **(6) महाविद्यालय से समाज को लाभ**-सत्येन्द्र जैन, **(7) समाज से विद्यार्थियों को लाभ**-शुभम जैन, **(8) विद्यार्थियों के सामने वर्तमान चुनौतियाँ**-प्रीतिंकर जैन, **(9) यदि महाविद्यालय न होता तो**-विनीत जैन, **(10) यदि स्वर्णिम काल का महत्व न समझा तो**-सचिन जैन।

सभी वक्ताओं ने बहुत अच्छा वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर सम्पूर्ण सभा गद्गद् हो उठी।

गोष्ठी का सफल संचालन शास्त्री अन्तिम वर्ष के छात्र कुलभूषण अम्बेकर एवं समर्पण जैन ने किया। संयोजन सुमतिनाथ अम्बेकर, साकेत जैन व सचिन सागर ने किया।

(2) इसी क्रम में दिनांक 28 जुलाई को **'पंचपरमेष्ठी : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शास्त्री वर्ग में नीशू जैन मड़देवरा एवं उपाध्याय वर्ग में शुभम जैन गौरझामर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गोष्ठी का संचालन शास्त्री अन्तिम वर्ष के रूपेन्द्र जैन छिन्दवाड़ा एवं अभय जैन सुनवाहा ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर दिनांक 14 जुलाई को हुई गोष्ठी के पुरस्कार भी वितरित किये गये, जिसमें श्रेष्ठ कविता हेतु उपाध्याय वर्ग से चेतन जैन खिमलासा (उपाध्याय वरिष्ठ) ने तथा शास्त्री वर्ग से साकेत जैन जयपुर (शास्त्री अन्तिम वर्ष) ने, श्रेष्ठ निबंध हेतु उपाध्याय वर्ग से शुभांशु जैन कोटा (उपाध्याय कनिष्ठ) तथा शास्त्री वर्ग से अभय जैन सुनवाहा (शास्त्री अन्तिम वर्ष) ने एवं श्रेष्ठ कहानी हेतु उपाध्याय वर्ग से स्वप्निल जैन भोपाल (उपाध्याय वरिष्ठ) तथा शास्त्री वर्ग से अभिषेक जैन हीरापुर (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त कर पुरस्कार प्राप्त किया।

शिलान्यास एवं विधान संपन्न

मलकापुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन श्री कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर एवं पाठशाला भवन का शिलान्यास एवं पंचपरमेष्ठी विधान दिनांक 27 व 28 जून को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. केशरीचन्दजी धवल छिन्दवाड़ा, ब्र. यशपालजी जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में शिलान्यास सभा विधायक श्री चैनसुखजी संचेती मलकापुर, मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्रजी पाटनी (पूर्व विधायक, वाशिम), ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा (परम संरक्षक) आदि महानुभाव मंचासीन थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलकुमारजी 'धवल' भोपाल, पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशचन्दजी इन्दौर द्वारा संपन्न कराये गये।

हार्दिक बधाई

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक डॉ. महेश जैन भोपाल को दिनांक 27 जुलाई 2013 से महर्षि पतन्जलि संस्कृत संस्थान (मध्यप्रदेश संस्कृत बोर्ड) का डायरेक्टर नियुक्त किया गया है।

महाविद्यालय के स्नातक जो म.प्र. संस्कृत शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं, म.प्र. में संस्कृत शिक्षा विभाग से संबंधित अपनी समस्याओं के लिए डॉ. महेशजी से उनके मो. नं. 9406527501 पर संपर्क कर सकते हैं।

डॉ. महेश जैन को इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

सिद्धभक्ति

3 प्रथम पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

आत्मा और मोहराजा के महाभारत में इसके आगे क्या होता है ? इस संबंध में आगे के छन्दों में देखिये।

वे छन्द मूलत: इसप्रकार हैं ह्न

(पद्धरि छन्द)

लखि मोह शत्रु परचंड जोर, तिस हनन शुकल दल ध्यान जोर।
आनन्द वीर रस हिये छाय, छायक श्रेणी आरम्भ थाय।।६।।
बारम गुणथानक ताहि नाश, तेरम पायो निजपद प्रकाश।
नव केवललब्धि विराजमान, दैदीप्यमान सोहे सुभान।।७।।

चारित्रमोह नामक शत्रु का प्रचंड जोर देखकर हे भगवन् ! आपने छठवें-सातवें गुणस्थानवाली मुनि अवस्था में उस चारित्रमोह नामक शत्रु का जड़मूल से नाश करने के लिए शुक्लध्यानरूपी दल का गठन किया और उसके जोर से चारित्रमोह पर आक्रमण किया। उस समय आपके हृदय में अतीन्द्रिय आनन्दरूपी वीर रस छाया हुआ था और आपने उसी समय क्षपकश्रेणी का आरोहण किया और क्षीणमोह नामक बारहवें गुणस्थान में पहुँच कर मोहरूपी राजा का पूरी तरह नाश कर दिया।

इसप्रकार बारहवें गुणस्थान में उसका नाश करके आप निजपद से प्रकाशित हो उठे, आप तेरहवें गुणस्थान में पहुँच गये, आपको केवलज्ञान हो गया। **आप अनन्त सुखी हो गये, नौ केवललब्धियों से विराजमान होकर सूर्य के समान दैदीप्यमान सुशोभित होने लगे।**

नौ प्रकार के क्षायिकभाव ही नव केवललब्धियाँ हैं; जो इसप्रकार हैंह्न

१. क्षायिकज्ञान, २. क्षायिकदर्शन, ३. क्षायिकदान, ४.क्षायिक लाभ, ५. क्षायिकभोग, ६. क्षायिक उपभोग, ७. क्षायिकवीर्य, ८.क्षायिकसम्यक्त्व और ९. क्षायिकचारित्र।

इसप्रकार जब आपका शासन पूरी तरह निरापद हो गया तो निश्चिंत होकर आपने...

(पद्धरि छन्द)

तिस मोह दुष्ट आज्ञा एकांत, थी कुमति स्वरूप अनेक भाँति।
जिनवाणी करि ताको विहंड, करि स्याद्वाद आज्ञा प्रचंड।।८।।

उस दुष्ट मोहराजा की जो एकान्त की पोषक आज्ञा चलती थी, जो अनेक प्रकार कुमति स्वरूप थी; आपने दिव्यध्वनि द्वारा उस एकान्त सिद्धान्त का भलीभाँति खण्डन करके **प्रचंड आज्ञा द्वारा स्याद्वाद की स्थापना की।**

स्याद्वाद की निरकुंश स्थापना के बाद क्या हुआ ? यह जानने के लिए अगले छन्द देखिये; जो इसप्रकार हैं ह्न

(पद्धरि छन्द)

वरतायो जग में सुमति रूप, भविजन पायो आनंद अनूप।
थे मोह नृपति उपकरण शेष, चारों अघातिया विधि विशेष।।९।।
है नृपति सनानत रीति एह, अरि विमुख न राखे नाम तेह।
यों तिन नाशन उद्यम सु ठानि, आरंभ्यो परम शुकल सु ध्यान।।१०।।

आपकी उस दिव्यध्वनि से सम्पूर्ण जगत में सुमतिरूप सम्यग्ज्ञान का प्रवर्तन हुआ, वीतरागी तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार हुआ; इससे भव्य जीवों ने अनुपम आनन्द की प्राप्ति की।

इतना सबकुछ हो जाने पर भी मोहकर्म का नाश होने के पहले जो अघातिया कर्मों की पुण्य प्रकृतियाँ बँधी थीं; वे पुण्य प्रकृतियाँ और अघातिया कर्म अभी भी विद्यमान हैं और उनके उदय में **समवशरणरूप विभूति, सुन्दरतम देह एवं अद्भुत दिव्यध्वनि भी विद्यमान हैं। ये सब उपकरण मोह राजा की निशानी हैं।**

राजाओं की सनातन नीति-रीति यह रही है कि वे शत्रुओं का पूर्णत: नाश हो जाने पर भी, कहीं किसी भी रूप में उनका नामोनिशान भी नहीं रहने देते। हे भगवन् ! **अरहंत अवस्था में उनका नामोनिशान भी मिटाने के लिए आपने परमशुक्लध्यान का उद्यम आरंभ किया।**

इसके बाद की स्थिति को जानने के लिए निम्नांकित छन्द देखियेह्न

(पद्धरि छन्द)

तिस बलकरि तिनकी थिति विनाश, पायो निर्भय सुखनिधि निवास।
यह अक्षय जोत लई अबाधि, पुनि अंश न व्यापो शत्रु व्याध।।११।।
शाश्वत स्वाश्रित सुखश्रेय स्वामि, है शांति संत तुम कर प्रणाम।
अन्तिम पुरुषारथ फल विशाल, तुम सुखसौं विलसौ अमित काल।।१२।।

फिर उस परमशुक्लध्यान के बल से, उन अघातिया कर्मों की स्थिति का नाश करके, आपने निर्भय होकर अनन्त सुख की निधि के आवास को प्राप्त किया।

तात्पर्य यह है कि हे सिद्ध भगवान इसप्रकार आपने यह सिद्ध पद प्राप्त किया है; आपने यह अबाधित अक्षय ज्योति जलाई है। अब इसके बाद आपको कर्मशत्रुरूप शिकारी का कोई अंश व्याप्त नहीं होगा। अब तो हे स्वामी ! आपने शाश्वत और स्वाधीन सुख प्राप्त कर लिया है; अब आपको अनन्त शान्ति भी प्राप्त हो गई है। संत कवि आपको बारंबार प्रणाम करते हैं।

आपने चार पुरुषार्थों में अन्तिम मोक्ष पुरुषार्थ का विशाल फल प्राप्त कर लिया है। अब तो आप अपरिमित काल तक सुख से विलास करो।

इसप्रकार यहाँ सिद्ध भगवान की भक्ति करते हुए भगवान आत्मा और मोह राजा के युद्ध के रूपक के माध्यम से आद्योपान्त मुक्तिमार्ग का प्रतिपादन कर दिया है।

इसप्रकार के प्रयोगों को आधार बनाकर पूरे ग्रंथ लिखे गये हैं; जिनमें एक नाम संस्कृत भाषा में लिखे गये **मदनपराजय** नामक नाटक का भी आता है। ग्रंथ के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें मदन अर्थात् कामदेवरूपी राजा की पराजय किसप्रकार हुई ह्न इस बात को सांग रूपक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जो बात पूरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत की जाती रही है; उस बात को महाकवि सन्तलालजी द्वारा यहाँ १३ छन्दों में पूरी सफलता के साथ प्रस्तुत कर दिया गया है।

जयमाला के अंत में एक घत्ता छंद लिखा गया है; जो इसप्रकार है ह्न

(घत्ता)

परसमय–विदूरित पूरित निजसुख समयसार चेतनरूपा।
नानाप्रकार पर का विकार सब टार लसै सब गुण भूपा।।
ते निरावर्ण निर्देह निरूपम सिद्धचक्र परसिद्ध जजूं।
सुर मुनि नित ध्यावैं आनन्द पावैं, मैं पूजत भवभार तजूँ।।

हे चेतनस्वरूप सिद्ध भगवान ! आप समयसारस्वरूप हैं। परसमय को विदीर्ण करनेवाले हैं और अपने अतीन्द्रिय आनन्द से भरे हुए हैं।

समयसार में पुद्गलकर्म के प्रदेशों में स्थित आत्मा को परसमय कहा गया है।[१] तात्पर्य यह है कि **जो जीव पौद्गलिक कर्मों के उदय से प्राप्त संयोग और संयोगी भावों में अपनापन स्थापित करते हैं; मिथ्यात्व से ग्रस्त वे जीव परसमय हैं।**

प्रवचनसार के अनुसार जो जीव पर्यायों में निरत हैं, उनमें ही अपनापन स्थापित करते हैं, उन्हें ही निजरूप जानते हैं; वे जीव परसमय हैं।[२]

ऐसे परसमयपने का आपने अभाव कर दिया है।

यदि स्वसमय और परसमय के संबंध में विशेष जानने की जिज्ञासा हो तो लेखक की अन्य कृतियाँ समयसार अनुशीलन और प्रवचनसार अनुशीलन के उक्त अंश का अध्ययन किया जाना चाहिए।

संसार अवस्था में जो अनेक प्रकार की विकारी अवस्थाएँ थीं; उन सभी को टार कर आप अनन्तगुणों के राजा बन गये हैं।

इसप्रकार आप कर्मों के आवरण से रहित हैं, पूर्णत: निरावरण हैं, मानव देह से भी रहित हैं, पूर्णत: निर्देह हैं, निरुपम हैं, आपकी उपमा किसी से नहीं दी जा सकती; क्योंकि जगत में कोई पदार्थ ऐसा है ही नहीं कि जिससे आपकी उपमा दी जा सके।

इसप्रकार हे प्रसिद्ध सिद्धों के समूहरूप सिद्धचक्र ! मैं आपकी पूजन करता हूँ। देवता लोग और मुनिगण निरन्तर आपका ध्यान करते हैं और आनन्द को प्राप्त करते हैं। मैं भी आपकी पूजन करके संसार के भार से मुक्त होना चाहता हूँ।

इसप्रकार इस जयमाला में प्रथम गुणस्थान से लेकर सिद्धदशा तक का सम्पूर्ण मोक्षमार्ग प्रशस्त कर दिया है। ●

१. समयसार, गाथा २
२. प्रवचनसार, गाथा ९३ एवं ९४

जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ श्री दि.जैन बाल विकास पारमार्थिक न्यास कोटा द्वारा दिनांक 15 से 22 जून तक 21वाँ जैन दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर रामपुरा, इन्द्र विहार, छावनी व बसन्त विहार केन्द्रों पर संचालित हुये। इन्द्रविहार में ब्र. नन्हे भैया सागर द्वारा, रामपुरा में पण्डित सचिनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा कक्षायें ली गईं। ब्र. चेतनाबेन देवलाली ने महिलाओं की कक्षायें लीं।

शिविर में लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। बालको की कक्षायें आचार्य धरसेन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा के छात्र विद्वानों द्वारा संचालित की गई।

शिविर का उद्घाटन श्री विजय जैन व श्री विपिन जैन ए. जैनको परिवार द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री चौथमल लक्ष्मीकान्त बावरिया परिवार द्वारा किया गया। **– सुशील कुमार जैन**

शोक समाचार

1. जयपुर (राज.) निवासी प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं समाजसेवी श्री तेजकरणजी डंडिया का 103 वर्ष की आयु में दिनांक 26 जुलाई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जानेमाने गणितज्ञ और शिक्षाविद् थे। आपको **लीजेन्ड इन एज्यूकेशन** की उपाधि और **अवंतिका रत्न** से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त 1996 में राष्ट्रपति ने आपको स्काउटिंग के सर्वोच्च सम्मान **सिल्वर एलीफेन्ट** से भी सम्मानित किया।

ज्ञातव्य है कि श्री डंडियाजी टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका के फूफाजी थे। आपका ट्रस्ट द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार की गतिविधियों में अपूर्व योगदान रहा।

2. विदिशा (म.प्र.) निवासी सेठ राजेन्द्र कुमार जैन की पौत्री व सेठ दीपक जैन की ज्येष्ठ पुत्री **कु. सोयल जैन** का दिनांक 15 जून को 25 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करे – यही मंगल भावना है।

नैतिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन सी.सै. स्कूल सी-स्कीम में श्रीमती कौशल्या देवी जैन मैमोरियल मोरल एज्यूकेशन फण्ड के सौजन्य से श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद् के तत्त्वावधान में दिनांक 8 से 13 जुलाई तक प्रात: 8.30 से 10.30 बजे तक नैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से छ: प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने हेतु आमंत्रित किया गया, जिन्होंने बालकों को प्रशिक्षण देकर परीक्षा ली। तदुपरान्त परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक भी प्रदान किया गया। शेष सभी को सान्त्वना पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

शिविर में श्री महावीर दि. जैन सी. सै. स्कूल एवं महावीर पब्लिक स्कूल के कक्षा 6, 7 एवं 8 के कुल 705 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतिदिन दो सत्रों में आयोजित इस शिविर के प्रथम सत्र में विभिन्न आगन्तुक वक्ताओं द्वारा नैतिकता पर उद्बोधन एवं द्वितीय सत्र में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर में प्रशिक्षण कार्य हेतु अभय जैन सुनवाहा, अंकुर जैन मडदेवरा, प्रशान्त जैन अमरमऊ, मयंक जैन टीकमगढ, शुभम मोदी खनियांधाना एवं नितिन जैन झालरापाटन ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शिविर के दौरान परिषद् के अध्यक्ष श्री एन.के. सेठी ने समय-समय पर बच्चों का मार्गप्रशस्त किया। **- रमा जैन**

आध्यात्मिक बाल शिक्षण शिविर संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ सीमन्धर जिनालय कांवाखेड़ा में कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश में बालकों को आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने हेतु दिनांक 16 से 23 जून तक आध्यात्मिक बाल शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर एवं मंगलायतन के विद्यार्थियों द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 72 बच्चों सहित अनेक साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर सम्यग्दर्शन कैसे प्राप्त करें, अपने जीवन का उत्थान कैसे करें आदि विषयों पर चर्चाएँ हुई, साथ ही मंगल कलश, भगवान बनो आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। शिविर के अन्तिम दिन बच्चों की मौखिक व लिखित परीक्षा हुई साथ ही पारितोषिक वितरण भी किया गया।

आवश्यकता

जीवन शिल्प इण्टर कॉलेज (नर्सरी से बारहवीं तक) विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए योग्य प्राचार्य एवं अध्यापकों की आवश्यकता है।

प्रबंधक - विकास शास्त्री, मो. 919453661666, स्थान - जीवन शिल्प इण्टर कॉलेज, बानपुर, ललितपुर (उ.प्र.)

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। **- मंत्री**

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127**

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

हार्दिक बधाई

1. किशनगढ (राज.) निवासी श्री सुशीलकुमार-मंजू पहाड़िया द्वारा अपने सुपुत्र **श्री सिद्धार्थ पहाड़िया** के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

2. सौ. विभूति का शुभ विवाह जवेरा निवासी **चि.इन्जी.प्रशम जैन** सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार जैन के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 501/- रुपये प्राप्त हुये।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127